राम कृष्ण अभिनेक्ष

पंचम् तत्व

जल पंच तत्वों में से एक प्रमुख तत्व है। जल से जीवन है। जल का प्रयोग हम धड़ल्ले से कर रहे हैं। कुछ लोग तो प्रतिदिन जहां आवश्यकता नहीं हैं वहां भी पानी बड़ी बेरहमी से बहाया करते हैं।

जल स्रोतों में या उनके पास-पड़ोस गंदगी बहाया करते हैं। ऐसी असावधानी भविष्य में जीव जगत के लिए खतरे की घंटी है जो कभी भी बज सकती है। इस खतरे से बचने के लिए लगभग सभी बुद्धिजीवियों के माथे पर दशकों पहले चिंता की लकीरें उभर चुकी हैं। वे दिन-प्रतिदिन गहरी होती जा रही हैं। पंचम् तत्व अर्थात जल के प्रति प्रस्तुत यह पद्य युक्त लेख पूर्व चिंता ग्रस्त विद्वानों के भगीरथ प्रयास का स्पष्ट अनुमोदन है।

पंचम् तत्व

जल प्रकृति की सर्वोत्तम देन है। प्रकृति शब्द प्र और कृति के संयोजन से बना है। प्रकृति का मूल अर्थ स्वभाव है जिसकी परिधि में विश्व की सभी स्वचालित प्रक्रियायें समाहित हैं। प्रारम्भ से अंत अर्थात जन्म से मृत्यु तक प्रकृति के अनुसार ही सभी गतिशील हैं। जीव-जन्तु, ग्रह सभी अपनी प्रकृति के अनुकूल कार्यरत हैं। इस बंधन से कोई भी मुक्त नहीं है।

अध्यात्मिक दृष्टि से प्र का अर्थ परा तथा कृति का अर्थ रचना है जिसे हम निम्न शब्दों में भी पारिभाषित कर सकते हैं।

प्रकृति वह रचना है जिसे उस परा शक्ति ने बनाया है जिसे किसी ने देखा नहीं है, परन्तु अस्तित्व में है।

संपूर्ण ब्रम्हाण्ड इसी प्रकृति द्वारा ही संचालित तथा नियंत्रित है। प्रकृति की महत्ता सार्वभौमिक है। यह अवयवों में बंटी हुई है जिसके प्रमुख अवयव जल, पृथ्वी,अग्नि, आकाश और पवन हैं। इन्हीं में से प्रमुख जल को पंचम् तत्व से संबोधित कर रहा हूं। सृष्टि जनक पांचों तत्वों में पंचम् तत्व अर्थात जल का ही अनुपात सबसे बड़ा है जिसे मैने अपनी ही एक रचना में इन शब्दों में वर्णित किया है।

जमीं में भी तू है, आसमां में भी तू है।
सारे जहां में छाया, बस तू ही तू है।।

जल सृष्टि का मूल आधार है, आशा है इस कथन से प्रत्येक प्रबुद्ध सहमत होगा। इसी संदर्भ में प्रस्तुत है निम्नलिखित रचना जिसका शीर्षक "आधार" है।

आधार

प्रकृति के नियम हैं आदि काल से,
सृजन और संहार।
इनको सदा चलते ही रहना है
यही है प्राकृतिक सरकार।।
प्रकृति प्रदत्त हैं पंच तत्व,
जिनमें मिलकर बना शरीर।
सर्व विदित नाम हैं जिनके
क्षिति जल पावक गगन समीर।।
पंच तत्व में सबसे बड़ा है,
जल का ही अनुपात।
इनके घट बढ़ से ही उपजते हैं,
तरह-तरह के उत्पाद।।
सोच समझ कर ही विधाता ने,
रचा है जल जंतु संजाल।
जल बिन धरती बांझ ही रहती,
सर्वत्र दिखते केवल कंकाल।।
जल की महिमा सर्वोपरि है,
जल है सृष्टि का मूलाधार।
जल से चलती जीवन नैया,
जल बिना न कोई सपना साकार।
सारी धरती पर धूल ही उड़ती,
सब दिशि होती गर्द गुबार।
बूंद-बूंद पानी को लोग तरसते,
निस-दिन मरते लोग हजार।।

जलेन उपजति जलेन विनशति
जलेन पोषित है संसार।
जलेन पुष्पित जलेन पल्लवति,
जलहि फल अन्न आधार।।
क्षिति से गगन तक है,
फैला जल का ही व्यापार।
जल के बिना जग सूना है,
जल के हैं जग पर अंनत उपकार।।

जल आधार से परिचत होने के बाद आवश्यकता है जल महिमा के परिचय की। जल महिमा का परिचय अपने ही अन्तःकरण से निम्न प्रश्न पूछने पर स्वतः ही जागेगा। प्रस्तुत है वे स्वाभाविक प्रश्न?

प्रश्न

जल नहीं होता अगर जगत में,
तो जीवन कहां से आता?
जल बिन खेत नहीं सिंचते,

कैसे कृषक अन्न को बोता?
कन्द मूल भी किसी को नहीं मिल पाते,
चाहे जितने जतन वह करता,
कृषक अन्न नहीं बो पाता,
तो मानव क्या खाकर अपनी भूख मिटाता?

जल-जीव और वनस्पति दोनों का प्राण है। जनन भरण पोषण प्रजनन आदि सभी जैविक क्रियाएं जल की अनुपस्थिति में सम्भव नहीं हैं। सबसे आवश्यक और महत्वपूर्ण होते हुए भी जल की दुर्दशा दुरूपयोग और प्रदूषण जैसे दोष चिंतनीय हैं जो मनुष्य विविध रूपो में कर रहा है।

चिंतनीय

जल के प्रति आज मनुष्य की,
भ्रमित बहुत भावना है।
निकट भविष्य में होने वाला
जल संकट से सामना है।।
क्योंकि दिन-प्रतिदिन धरा पर,
बढ़ रहा है जनसंख्या का भार।
बढ़ रही है आवश्यकता जल की,
घट रहा है संचित जल भंडार।।
उपलब्ध स्रोत पोखर नदी
तालाब व नाले हैं जल के।
स्वच्छ नहीं, है आज
आंकलन में अपेक्षा कल के।।
अनेक रूपों में दिन प्रतिदिन,
प्रदूषण बढ़ता ही जा रहा है।
नियंत्रण की सभी इकाईयों को,
शान से ठेंगा दिखा रहा है।।
जल की स्थिति सर्वत्र
आज बड़ी ही दयनीय है।
जल प्रदूषण का विषय
हम सभी के लिए चिंतनीय है।।
जबकि गुणवत्ता के आधार पर
जल है बहु आयामी
है विशाल बहुत जल क्षेत्र।
जल ही जीवन है सबका
देखो खोल कर अपने नेत्र।।
विविध रूप में जल सदा ही रहता,
इसमें नहीं कोई संदेह।
जल की कमी रहें न धरा पर,
इसीलिए ईश्वर बरसाता है मेह।।

वर्तमान का मनुष्य भौतिकता की दिशा में अंधानुकरण कर भेड़ का आचरण अपना रहा है।
अपने विवेक को तो धन का लोलुप बना दिया है।
अपनी क्रिया की प्रतिक्रिया को तो उसने अपनी गणना से बाहर निकाल ही दिया है जिसका परिणाम

कहीं खेत सूख रहे हैं
तो कहीं बढ़ रहे रोग हैं।
अकाल मौत के साये तले,
जी रहे हम सभी लोग हैं।।

निष्कर्ष यह है आचरण भ्रष्ट हो गया है एक से बढ़कर एक प्रकृति के अधिकांश लोग अनुयायी हो गए हैं। प्रतिस्पर्धा में हम दुराचरण के शिकार हो गए हैं। नेक सलाह को सुनने में ही लोगों को रूचि नहीं है। प्रवृत्ति दूषित हो गई है जिसकी बानगी वर्तमान सोच का नतीजा है-

न हम मान रहे हैं सुझाव को
न समझा रहे हैं परिवार को।
दोष है जनता का सारा
कोस रहे सभी सरकार को।।

अपने आचरण को कोई भी सुधारने का प्रयास नहीं कर रहा है। अविवेक के वशीभूत होकर-

फुनगी सींचने में जुटे हैं
भूल गए हैं मूल को।
गप्पों से फुर्सत नहीं है

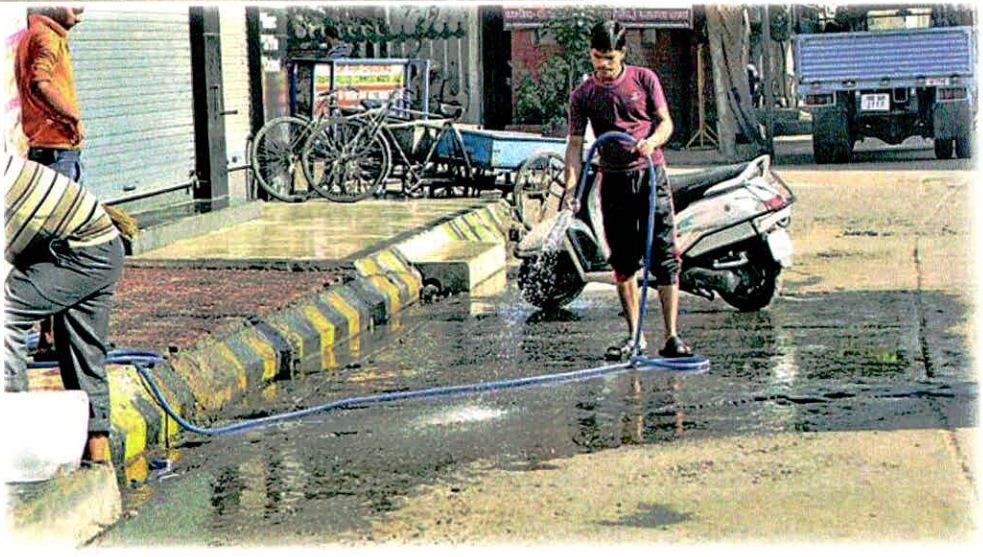

तड़पना रोना गिड़गिड़ाना मनौती
कुछ न आयेगा उस वक्त तेरे काम।
बीमारियों का परिणाम ऐसा देख
पुकारता फिरेगा। त्राहि माम।।

इस त्रासद समस्या से छुटकारा पाने के लिए तथा हंसता खेलता संपन्न परिवार भविष्य में देखने के लिए सम्मिलित, सामूहिक, सकारात्मक प्रयास करने होगें क्योंकि

सकारात्मक प्रयासों से भविष्य में,
जल संकट से परित्राण होगा।
हे नादान मानव सही राह चल तू,
इसी मंत्र जाप से तेरा कल्याण
होगा।

यदि हम सकारात्मक सामूहिक प्रयासों का श्री गणेश नहीं करते हैं तो जब हमारा पौरूष घट जायेगा, घटते-घटते शून्य के निकट आएगा

सुधारगें कैसे भूल को।
जबकि मूल सुधार की आवश्यकता,
आज ही अविलम्ब है।
हवा में महल बना रहे हैं,
पैरों तले नहीं अवलम्ब है।
वर्तमान स्थिति यह है कि
हैण्डपम्प सूखे पड़े हैं
सब-मर्सिबल का साथ है।
पीने को लोग तरस रहे हैं।
धोए जा रहे फुटपाथ हैं।
निर्लज्ज हो गए हैं लोग,
मानते नहीं प्रकृति का उपकार हैं।
सच्चाई तो यह है कि
जल की हर बूंद अनमोल है।
जल से बढ़कर दूजा उपहार नहीं है।

सार

सीमित जल भण्डार है भूगर्भ में
अवशेष
आवश्यकता से अधिक दोहन हित
में नहीं।
जल के प्रति यह दुर्व्यवहार है
जो किसी भी तरह से उचित नहीं।।
फिर भी न जाने क्यूं लोग अब भी,
अपनी हरकत से बाज आते नहीं।
जल को बरबाद कर रहे हैं बेवजह,
अपनी ओछी करनी पर पछताते
नहीं।।
कर रहे हैं मनमानी बहुत दिनों से,
कर रहे हैं नहीं कुछ आज भी
सोचकर।
विषैला कर रहे हैं जल को बन
नादान,
जल में कूड़ा कचड़ा गंदगी
फेंककर।।

मुनष्य की यह भूल उसकी पैदा की हुई स्थितियां उसे कोरा नहीं बचने देंगी। भविष्य में मनुष्य को इस भूल की इतनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी जिसे वह कभी भी नहीं देना चाहेगा परन्तु देने के लिए मजबूर होगा। इसमें कोई संदेह नहीं है क्योंकि वह अपनी कार्य शैली से मौत को अपने घर जल्दी आने का न्योता दे रहा है। कारण है मनुष्य

तू किसी और से नहीं
स्वयं से कर रहा है छलावा
अपने बुरे कर्मों से दे रहा है।
असमय अपने घर मौत को बुलावा।।

जिसका परिणाम होगा त्राहि माम त्राहि माम अर्थात हे भगवान मुझे माफ करो, क्षमा करो की भीख जो तुझे नहीं मिलेगी। स्थितियां यह दृश्य उपस्थिति कर देंगी।

बीमारियां खड़ी हो जायेंगी बन
सुरसा
अपना भयानक डरावना मुंह
खोलकर।
सीना फटेगा तेरा देख अपनों को
बीमारियों से तड़पता मरता
देखकर।।
स्वयं को हम असहाय पायेगें।
तब हमारे लिए मझधार डूबेगी हमारी
नैया
जब होंगे हमारे हाथ खाली न पतवार
होगी।
अपनी बरबादी के लिए रोएंगें
इधर-उधर,
सारी दुर्दशा के लिए हम ही
जिम्मेदार होंगे।।

संपर्क करें:
राम कृष्ण अभिनेक्ष
पंजाबी बिल्डिंग, बनियां बाजार,
कैन्ट कानपुर -208 004
ईमेल : abhineksh13@yahoo.com